नृत्य भूषण (प्रथम खंड)
Nritya Bhushan Part-I (First Year)
कत्थक नृत्य (KATHAK DANCE)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) **परिभाषा**-लय,ताल, मात्रा, सम, ताली, खाली, आवर्तन, विभाग ठेका, नृत, तत्कार, गत, पल्टा आमद, परण, नृत्य, नाटय, लास्य, ताण्डव तथा सलामी।

(२) पाठयक्रम में निर्धारित ताल समूहों के ठेके ठाह और दुगुन लय में लिखनें का अभ्यास।

(३) ततकार एक गुण (ठाह), दुगुन और चौगुन में लिखनें का अभ्यास।

(४) जीवनी-श्री शम्भू महाराज और अच्छन महाराज।

क्रियात्मक (Practical)

(१) गर्दन और कन्धे के शारीरिक व्यायाम का अभ्यास।

(२) लय और छन्द में चलनें का अभ्यास।

(३) (क) त्रिताल में ठाह, दुगुन और चौगुन लय में दो प्रकार के तत्कार हाथ की मुद्रा सहित।

(ख) आठ साधारण तोडे व टुकडे।

(ग) तीन साधारण गत निकास।

(४) दादरा एवं कहरवा ताल के गीत पर नृत्य करने की क्षमता।

(५) पाठयक्रम में निर्धारित सब टुकडे और तत्कार हाथ पर ताली-खाली दिखाकर बोलनें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

नृत्य भूषण (द्वितीय खंड)
Nritya Bhushan Part-II (Second Year)
कत्थक नृत्य (KATHAK DANCE)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) नृत्य में घुंघरू के प्रयोजन और महत्व के सम्बन्ध में ज्ञान और नृत्य के घुंघरू किस प्रकार के होने चाहिए।

(२) (क) छः अंग, (ख) छः प्रत्यंग अर्थात उनके उपांग,
(ग) आठ नयन भाव। (घ) चार प्रकार के ग्रीवा संचालन,
(ड) छः भृकुटि संचालन।

(३) जीवन परिचय गुरू नारायण प्रसाद एवं विन्दा दीन जी।

(४) परिभाषा-कवित्त, चक्करदार परण, गत, असंयुक्त मुद्रा।

(५) पाठयक्रम में निर्धारित तालों में टुकडा, परण आदि ताल लिपि में लिखनें का अभ्यास।

(६) भातखण्डे ताल लिपि पद्धति का ज्ञान।

क्रियात्मक (Practical)

(१) लय और ताल में कन्धा, सिर कमर आदि का संचालन ।

(२) ठाट, कसक, मसक और कटाक्ष।

(३) पूर्व वर्ष के पाठयक्रम के तोडों का विलम्बित लय में प्रदर्शन का अभ्यास।

(१) त्रिताल में - क: आठ तोडे,
ख: दो परण ,
ग:दो आमद,
घ: एक सलामी,
ड: दो कवित।

(५) अपताल में - क: ठाह और दुगन में तत्कार।
ख: दो परण।
ग: छः तोडे।

(६) त्रिताल, दादरा और कहरवा ताल में आधुनिक नृत्य।
(७) चेहरे के विशेष भाव के सहित पांच गत-निकास का प्रदर्शन।
(८) चार प्रकार का ग्रीवा संचालन और आठ प्रकार का मस्तक संचालन।
(९) एक हाथ की मुद्रा का क्रियात्मक ज्ञान।
(१०) त्रिताल झपताल, कहरवा और दादरा ताल में नृत्य का अभ्यास।
(११) उपयुक्त तालों कें ठेकों को ठाह, दुगुन और चौगुन लय में बोलकर एवं नृत्य के माध्यम से प्रदर्शन की क्षमता।

टिप्पणी-पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

नृत्य भूषण पूर्ण

Nritya Bhushan Final (Third Year)

कत्थक नृत्य (KATHAK DANCE)

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) निम्नलिखित परिभाषिक शब्दों का विस्तृत अध्ययन--
कसक, मसक, कटाक्ष, ठाह, लघु, गुरू, द्रुत और अनुद्रुत।
(२) कत्थक और नटवरी नृत्य का अन्तर एवं उनमें कौन नृत्य प्राचीन है।
(३) भारतीय नृत्य का इतिहास।
(४) रस और भाव की परिभाषा।
(५) कत्थक नृत्य की वेशभूषा (Dress)!
(६) अभिनय का विस्तृत वर्णन।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित अंग संचालन की क्षमता ताल सहित-
क: अंग-प्रत्यंग का संचालन।
ख: भ्रकुटि का संचालन।
ग: नेत्रों का संचालन।

(२) **त्रिताल में -** क: तत्कार और उनके प्रकार।
ख: परम्परागत आमद।
ग: दो सलामी।
घ: चार चक्करदार परण।
ड: तीन कवित।
च: चार गत निकास एक गत भाव।

(३) **झपताल में -** क: विभिन्न लयकारियों में तत्कार ।
ख: दो आमद।
ग: एक सलामी।
घ: दो चक्करदार टुकडे।
ड: दो चक्करदार परण।

(४) **एकताल में -** क: विभिन्न लयकारियों में तत्कार तथा एक पल्टा।
ख: चार टुकडे।
ग: एक आमद।
घ: एक सलामी।
ड: दो परण।
च: एक चक्करदार परण।

(५)**धमार ताल में -** क: तत्कार।
ख: दो टुकडे,
ग: एक आमद,
घ: एक सलामी,
ड: दो परण,
च: एक चक्करदार परण।

(६) ठाट के साथ कसक और मसक का अभ्यास।

(७) घूघंट और मटकी में गत निकास का अभ्यास।

(८) टुकडा परण एवं गत रचना में लखनऊ और जयपुर घरानों के बीच अन्तर दिखलाकर प्रदर्शन की क्षमता।

(९) त्रिताल, झपताल, धमार और एकताल की ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन लयकारी हाथ पर खाली ताली दिखाकर बोलनें का और नृत्य प्रदर्शन करनें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्र संयुक्त रहेंगा।